بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-01.03.2024 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

ओहद के युद्ध में हज़रत हमज़ा रज़ी. की शहादत तथा अन्सारी महिलाओं का नौहा, हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ी. की शहादत पर आँहज़रत स. की दुआ तथा रसूल स. की महिला सहाबियों की अनूठी भूमिका।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 01 मार्च 2024, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ أَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ओहद की लड़ाई के हालात बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ख़मियों तथा शहीदों को जमा किया। ज़ख़मियों की मरहम पट्टी की गई तथा शहीदों को दफ़नाने की व्यवस्था की गई। उस समय पता चला कि काफ़िरों ने कुछ सहाबियों को केवल शहीद ही नहीं किया बल्कि उनके नाक कान भी काट दिए हैं। यह देख कर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बड़ा दुःख हुआ। उन शहीदों में आप स. के चाचा हज़रत हमज़ा रज़ी. भी शामिल थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि काफ़िरों ने स्वयं अपने व्यवहार से अपने लिए इस बदल को वैध बना दिया है, जिसको हम अवैध समझते थे। उस समय ख़ुदा तआला की ओर से वह्यी अवतरित हुई कि काफ़िर जो कुछ करते हैं उन्हें करने दो, तुम दया एवं न्यायसंगत व्यवहार सदैव थामे रखो।

हज़रत हमज़ा रज़ी. को दफ़नाने के विषय म लिखा है कि आप रज़ी. को एक ही कपड़े में कफ़न दिया गया। जब आप रज़ी. का सिर ढांका जाता तो कपड़ा पाँव से हट जाता और जब पाँव ढांके जाते तो चेहरे से कपड़ा सरक जाता। इस पर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आपका चेहरा ढांक दिया जाए तथा पाँव को घास से ढक दिया जाए।

नौहा (विलाप) तथा बैन जो मृतकों पर तथा मरने वालों पर किया जाता है, उसको कितनी विवेक पूर्ण शैली में आप स. ने मना फ़रमाया, एक रिवायत में आता है और यह हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ी. की रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब ओहद से वापस लौटे तो आप स. ने सुना कि अन्सार की महिलाएँ अपने पतियों की मृत्यु पर रोती हैं तथा विलाप भी करती हैं। आप स. ने फ़रमाया कि क्या बात है, हमज़ा पर रोने वाला नहीं। अन्सार की महिलाओं को पता चला तो फिर वे हज़रत हमज़ा रज़ी. की शहादत पर रो रो कर गीत गाने के लिए एकत्र हो गईं। फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँख लग गई, मेरे विचार में सम्भवतः मस्जिद में ही कुछ दूरी पर थे और जब जागे तो महिलाएँ उसी प्रकार रो रही थीं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आज हमज़ा का नाम लेकर रोती ही रहेंगी ये लोग, बन्द नहां करेंगी। इन्हें कह दो कि वापस चली जाएँ। तब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें निर्देश दिया कि अपने घरों को वापस लौट जाएँ और आज के बाद किसी मरन वाले का शोक तथा विलाप न करें। इस प्रकार बड़ी विवेक शील शैली में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अन्सार की महिलाओं की भावनाओं का ध्यान रखा। उन्हें अपने पतियों तथा भाईयों की जुदाई पर मातम से रोकने के बजाए हज़रत हमज़ा रज़ी. का नाम लिया कि उन पर रोने वाला कोई नहीं। आप स. को हज़रत हमज़ा रज़ी. की शहादत पर, फिर शव का अपमान देख कर बड़ा दुःख था परन्तु जब देखा कि अन्सार महिलाएँ अब यह विलाप करना बन्द ही नहीं कर रहीं तो फिर इस पर इस प्रथा को रोकने के लिए, यह प्रथा ही थी एक, अपना नमूना पेश कर दिया तथा उन्हें धैर्य का उपदेश दिया। ऐसा उपदेश जो प्रभाव पूर्ण था। जहाँ तक आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हज़रत हमज़ा रज़ी. की जुदाई के दुःख का सम्बंध है, वह अन्त तक आपको रहा, सदैव उसका वर्णन करते थे।

हज़रत मुस्अब रज़ी. के दफ़न करने का वर्णन यूँ मिलता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ी. के शव के पास पहुंचे, उनका शव चेहरे के बल पड़ा था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें देख कर यह आयत पढ़ी कि मोमिनों में से ऐसे पुरुष हैं जिन्होंने जिस बात पर अल्लाह से ऐहद किया उसे सच्चा कर दिखाया, अतः उनमें से वे भी हैं जिन्होंने अपनी मन्नत को पूरा कर दिया तथा उनमें से वह भी ह जो अभी प्रतीक्षा कर रहा है। यह आयत पढ़ कर आप स. ने फ़रमाया कि अल्लाह का रसूल गवाही देता है कि तुम लोग क़यामत के दिन भी ख़ुदा के समक्ष शहीद हो। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबियों रज़ी. को हिदायत फ़रमाई कि इनका दर्शन कर लो तथा इन पर सलाम भेजो। उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, क़यामत के दिन तक जो भी इनका सलाम करेगा वे उसका जवाब देंगे।

ओहद के दिन हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शहीदों को दफ़न करने के बाद सब लोगों को जमा करके यह दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह, समस्त प्रशंसाएँ तेरे लिए हैं। ऐ अल्लाह, जिस चीज़ को तू विस्तृत कर दे उसको कोई रोकने वाला नहीं और जिस को तू रोक ले उसको कोई विस्तार नहीं दे सकता और जिसे तू भटका दे उसको कोई हिदायत देने वाला नहीं और जिसको तू हिदायत दे दे उसको कोई

पथभ्रष्ट नहीं कर सकता तथा जो चीज़ तू रोक ले उसको कोई देने वाला नहीं तथा जा तू प्रदान कर दे उसे कोई रोकने वाला नहीं और जिसका तू दूर कर दे उसको कोई निकट लाने वाला नहीं है और जिसको तू निकट कर दे उसको कोई दूर करने वाला नहीं है। ऐ अल्लाह, हमें मुसलमान होने की अवस्था में मृत्यु दे तथा हमें मुसलमान होने की अवस्था में जीवित कर तथा हमें नेक लोगों के साथ इस प्रकार जोड़ दे कि न हम बदनाम हों तथा न ही फ़ितने में पड़ें। ऐ अल्लाह मअबूदे हक़, उन काफ़िरों का विनाश कर दे जो तेरे रसूलों को झुठलाते हैं तथा तेरे रास्ते से रोकते हैं और उन पर अपना प्रकोप एवं दंड भेज दे। ऐ अल्लाह, अह्ले किताब काफ़िरों का नष्ट कर दे, आमीन।

ओहद की लड़ाई में महिलाओं ने भी पुरुषों के कन्धे से कन्धा मिला कर सेवा करने की विशेष भूमिका निभाई थी। हज़रत उम्मे सलमा रज़ी. का ओहद के युद्ध में शामिल होने का वर्णन मिलता है। इसी तरह रावी कहते हैं कि ओहद के दिन मैंने आयशा रज़ी. तथा उम्मे सलमा रज़ी. को देखा कि वे मशक में पानी भर कर लातीं और प्यासों को पिलातीं थीं। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ी. की माता जी उम्मे सलीत रज़ी. और हज़रत उम्मे अतिया रज़ी. के विषय में भी यही वर्णन मिलता है। इसी तरह कुछ मुस्लिम महिलाएँ भाले एवं तलवार के साथ काफ़िरों से लड़ीं जिनमें हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ी. का नाम सर्वोच्च है। फिर हज़रत फ़ातमा रज़ी. का हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घाव धोने का वर्णन भी मिलता है। इसी तरह एक रिवायत में यह वर्णन मिलता है कि हज़रत आयशा रज़ी. ओहद के युद्ध की ख़बर लेने के लिए कुछ अन्य महिलाओं के साथ घर से बाहर निकलीं तो उनकी भेंट रास्ते में हिन्द सुपुत्री उमरू रज़ी. से हुई। हिन्द, अब्दुल्लाह बिन उमरू रज़ी. की बहिन थीं। आप अपनी ऊँटनी को हांक रही थीं और उस ऊँटनी पर हज़रत हिन्द रज़ी. के पति, बेटे तथा भाई के शव थे। हज़रत आयशा रज़ी. ने उनसे युद्ध के मैदान का हाल पूछा तो हज़रत हिन्द रज़ी. ने जवाब दिया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सकुशल हैं और आप स. के होते हुए हर कठिनाई सरल है। अपने तीन निकटवर्ती रिश्तेदारों की, पति, बेटा तथा भाई के शव उठाए हैं किन्तु पूछने पर यह कहा कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ठीक हैं तो सब ठीक है, इनको तो मैं दफ़ना ही दूँगी अब, जब आप स. कुशल हैं तो फिर कोई ऐसी बात ही नहीं।

हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ी. कहती हैं कि ओहद की लड़ाई में जब रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ कुछ ही सहाबी रह गए तो मैं हुज़ूर स. के पास भाग कर पहुंची तथा तलवार से काफ़िरों को आप स. के पास आने से रोकने लगी, साथ ही कमान से भी तीर चलाए, यहाँ तक कि स्वयं भी ज़ख़मी हो गई। हज़रत उम्मे ऐमन रज़ी. ज़ख़मियों को पानी पिला रही थीं कि एक मुशरिक ने उनकी ओर तीर चलाया जो आप रज़ी. के दामन में जा लगा। यह देख कर वह काफ़िर हंसने लगा। इस पर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ी. को एक तीर दिया जिसकी नोक फलदार नहीं थी। आप रज़ी. ने वह तीर चलाया। वह तीर उस काफ़िर को लगा तथा वही पीछे की ओर जा गिरा जिससे उसका कपड़ा हट गया और उसका नंग प्रकट हो गया। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुस्कुराए।

हुज़ूर स. अल्लाह तआला के उस उपकार पर मुस्कुरा उठे कि ख़ुदा ने उस काफ़िर को ऐसे तीर से रास्ते से हटाया जिसका फल भी नहीं था, मानो सीधी सी एक सोटी थी उसने ही उस काफ़िर को मार दिया।

एक लेखक ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शौर्य एवं विवेक का वर्णन करते हुए लिखा है कि जब ख़ालिद बिन वलीद की क़यादत में क़ुरैशी घुड़ सवार अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ी. तथा उनके साथियों को शहीद करते हुए इस्लामी सेना के पीछे से प्रकट हुए तब परीक्षा की उस घड़ी म रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उत्तम तथा अनूठी बहादुरी प्रकट हुई क्यूँकि आप स. ने अपनी जान को ख़तरे में डाल कर सहाबा किराम रज़ी. की जान बचाने का निर्णय फ़रमाया था और अत्यंत बुलन्द आवाज़ से सहाबियों को पुकारा, अल्लाह के बन्दो, इधर। आप स. की आवाज़ पूरे मैदान में गूँज गई थी। सहाबा किराम रज़ी. को भी परिस्थितियों का आभास हो गया था क्यूँकि वे काफ़ी दूरी पर मौजूद थे अतः उनसे पहले क़ुरैशी घुड़ सवारों के एक दल ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हमला कर दिया तथा शेष अन्य घुड़ सवारों ने तेज़ी के साथ मुसलमानों को घेरना शुरु कर दिया।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़ख़्मी हालत में भी होश व हवास क़ायम रखने तथा सहाबियों का मार्ग दर्शन करने तथा उनको उत्साहित करने का भी वर्णन मिलता है। उतबा बिन अबी वक़्क़ास ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर एक पत्थर खींच कर मारा जो आपके मुंह पर लगा और आपके सामने वाले दो दांतों में और नुकीले दांत के बीच वाला दांत टूट गया साथ ही उनका निचला होंट भी फट गया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उतबा बिन अबी वक़्क़ास के विरुद्ध यह दुआ की। ऐ अल्लाह, एक साल बीत जाने से पहले ही इसको काफ़िर के रूप में मृत्यु दे। अल्लाह तआला ने आपकी यह दुआ क़बूल फ़रमाई तथा उसको उसी दिन हातिब बिन अबी बलतआ ने मार डाला।

ख़ुत्बः के दूसरे भाग में हुज़ूरे अनवर ने मुकर्रम ग़स्सान ख़ालिद अन्नक़ीब साहब ऑफ़ सीरिया। मुकर्रमा नौशाबा मुबारका पतनी मुकर्रम जलीस अहमद मुरब्बी सिलसिला, आरकाईव अलहकम विभाग। मुकर्रमा रज़िया सुलताना साहिबा पतनी मुकर्रम अब्दुल हमीद ख़ाँ साहब मरहूम ऑफ़ रबवा। मुकर्रम बुशरा बेगम साहिबा पतनी मुकर्रम डा. मुहम्मद सलीम साहब ऑफ़ लाहौर। मुकर्रम रशीद अहमद चौधरी साहब ऑफ़ नार्वे। इन मृतकों का सद्वर्णन फ़रमाया तथा उनके जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ
سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا
شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ
ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ
وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131